ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 2, March 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

कालिदास के नाटकों में पर्यावरण के विविध आयाम

Dr. Rajmal Malav

Associate Professor in Dept. of Sanskrit, Govt. Arts Girls College, Kota, Rajasthan, India

सार

महाकवि कालिदास रचित मघदूतम् एक सफलतम रचना है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि कालिदास की अन्य रचनाएँ न होती, केवल अकेला मेघदूत ही होता तो भी उनकी कीत्रि में कोई अन्तर न पड़ता। मेघदूतम् संस्कृत साहित्य के प्रथम गीति-काव्य के रूप में प्रसिद्ध एवं प्रचलित है। कालिदास की कल्पना की ऊँची उड़ान और परिपक्व कला का यह एक ऐसा नमूना है, जिसकी टक्कर का विश्व में दूसरा नहीं। मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखा हुआ 121 पद्यों का यह छोटा-सा काव्य सार्वकालिक है। इसके दो भाग हैं - पूर्व मेघ और उत्तर मेघ। इसकी कथा वस्तु कवि कल्पित है। यह प्रिया के वियोग में व्यथित किसी यक्ष की कहानी है, जो संसार के समस्त काव्य-प्रेमियों को स्वाभाविक विरह गीत प्रतीत होता है।

परिचय

मेघदूतम् में कवि ने पर्यावरण को सदैव मृदु प्राकृतिक स्वरूप में देखना चाहा है। कवि जो चाहता है, वह उसके काव्य में दिखाई देता है। पर्यावरण का प्रभाव जन सामान्य पर पड़ता है। मानव का दायित्व है कि वह विश्व कल्याण के लिए प्रकृति की रक्षा करे, पर्यावरण को संरक्षित करे क्योंकि संतुलित पर्यावरण के बिना उसका अस्तिŸव ही नहीं रहेगा।[1]

सात्विक प्रवृति और उदात्त चिन्तन के कारण कालिदास ने मेघदूतम् में भारतीय संस्कृति के प्राण तत्त्व को सुरक्षित किया है। यहाँ सत्यम् शिवम् सुन्दरम् का सामंजस्य है। अन्तर्जगत् व बाह्य पर्यावरण का मोहक प्रस्तुतीकरण किया है। यहाँ आत्मा को तृप्त करने वाले रसायन, मन को प्रसन्न करने वाले वासन्ती पुष्प, नेत्रों को उद्दीप्त करने वाले वृक्षादि, जीवन को धन्य करने वाला स्वर्ग और धरा का अलौकिक स्वरूप उपलब्ध है। कालिदास भारत की आत्मा के प्रतिनिधि कवि हैं। प्राचीन भारतीय सभ्यता के प्रस्तोता हैं, वैदिक संस्कृति के अमर गायक हैं, पौराणिक मान्यताओं का मनन करने वाले हैं, शिव तत्त्व का सार जानने वाले हैं, स्वयं को पृथिवी की संतति समझने वाले है, इसलिए ये सारे भाव इनके काव्य में सहज दर्शनीय हैं। मेघदूतम् में बाह्य पर्यावरण के साथ अन्तः पर्यावरण का भी सूक्ष्म विश्लेषण है। मानव का आध्यात्मिक चिंतन उसे भौतिक जगत में कर्म हेतु प्रवृत्त करता है। अतः भौतिक पर्यावरण शुद्धि के लिये आध्यात्मिक अर्थात् आत्म शुद्धि आवश्यक है। अन्तः शुद्धि और बाह्यशुद्धि का अनन्य सम्बन्ध है। इसके लिये अहिंसा का व्यवहार और अनेकान्त का विचार परमावश्यक है। कालिदास वैदिक-सिद्धांत एवं आचार को मानते हैं जो तन शुद्धि, मन शुद्धि और पर्यावरण शुद्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। जिन्हें वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं के सन्दर्भ में समझना होगा। इन्हें अपने आचरण में समाहित करना आज की महती आवश्कता है।[2]

मेघदूतम् में कवि ने अपने प्रिय प्रकृति व पर्यावरण के प्रायः सभी घटकों को प्रस्तुत किया है। अग्नि, वायु, जल, आकाश, पृथ्वी, सूर्य, चंद्रमा, औषधि एवं वनस्पति आदि सब शिवस्वरूप हैं अर्थात् कल्याण कारक है, इसका उपदेश किया है। प्रत्युपकार की इच्छा के बिना सदा ये हमारी सहायता करते हैं इसलिए देवतुल्य हैं। इसके अधिकांश पद्यों में पर्यावरणीय तŸवों को स्मरण किया है और सन्देश दिया है कि प्रकृति के विरुद्ध आचरण नहीं करना चाहिए। पूर्वमेघ में तो वाह्य प्रकृति का सुन्दरतम स्वरूप चित्रित हुआ है। एक ओर जहाँ गन्धवती, गम्भीरा, चर्मण्वती, रेवा, जाह्नवी, मन्दाकिनी, यमुना, देवगंगा, सरस्वती जैसी नदियाँ हैं तो दूसरी ओर अलका, अवन्ती, विदिशा, कुरूक्षेत्र व उज्जयिनी उदात्त स्वरूपधारी नगर। कहीं रामगिरि, आम्रकूट, देवगिरि, नीचैर्गिरि जैसे पर्वत व पठार दिखाई देते हैं तो कहीं विस्तृत हिमालय, विन्ध्य व कैलास। कहीं रामगिरि का पवित्र जलयुक्त सरोवर है तो कहीं हंसों का प्रिय जगत् प्रसिद्ध मानसरोवर। आश्रम, पर्वत, मेघ, नदियाँ, झरने, उद्यान, सघन व छायेदार वृक्ष, लताएँ, बेंत, कमलनाल, कुकुरमुत्ता, पुष्पावली, चातक, बलाका, मिट्टी की खुशबु, जामुन के वन, केसर, कदम्ब, हिरण, मोर, कपोत, गज, जूही की कली, शिलागृह, सरकण्डे का वन, यज्ञधूम, चमरी गाय, देवदारू, शरभ, कस्तूरी मृग, वन गूलर, कुन्द, कुटज, लोध्र, कुरबक, शिरीष, कदम्ब, भ्रमर, चाँदनी, अरविन्द, अशोक, आम्र, नीलोत्पल, नवमल्लिका, इक्षुदण्ड, कल्पवृक्ष, रतिफल, मन्दार, रत्नदीप, विमानाग्रभूमि, चन्द्रकान्त मणि, बैभ्राज, अश्व, गज, दिग्गज, बालमन्दार, माधवी, बकुल, शंख, पद्म, जुगनू, बिम्बफल, हिरणी, चकवी, पद्मिनी, शुक-सारिका, मछली, कदलीस्तभ, वनदेवी आदि। क्या नहीं है मेघदूत में जिस पर कवि की दृष्टि न गई हो।[3]

कालिदास ने मूलतः मानवीय दृष्टिकोण से परिवेश का निरीक्षण किया है। मेघदूतम् के प्रत्येक पद्य में अपने इसी निरीक्षण का सम्यक् निरूपण कर मानव और उसके परिवेश के पारस्परिक सम्बन्धों का काव्यमय विलास प्रस्तुत किया है। मानव और पर्यावरण

के सम्बन्धों के विविध आयामों को दिखाया है। कालिदास की पर्यावरणीय दृष्टि का सर्वाधिक सूक्ष्म एवं प्रामाणिक परिचय मेघदूत में मिलता है।

कालिदास का मेघदूतम् प्रकृति प्रेम व सूक्ष्म पर्यावरणीय चिन्तन का सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसके प्रायः प्रत्येक पद्य में प्रकृति की आशा भरी आत्मा की वेदना का चित्रण है। संयत, गम्भीर और प्रशान्त व्याकुलता पद-पद पर दर्शनीय है। मेघदूतम् में कवि ने प्रकृति और मानव को एक नवीन एवं मौलिक रूप से परस्पर जोड़ दिया है। मानव जीवन तथा प्राकृतिक जीवन के संग्रन्थन को एक आवश्यकता और अद्वितीय आनन्द के रूप में प्रस्तुत कर कवि ने अपने सूक्ष्म पर्यावरण चिन्तन का परिचय दिया है।[4]

मेघदूतम् में कालिदास ने अपने प्रकृति प्रेम तथा पर्यावरण चिन्तन को न केवल हृदयग्राही बनाया है अपितु सर्वात्मना रसाप्लावित कर उसमें निमग्न कर देने वाला भी बनाया है। प्रकृति एवं पर्यावरण के मूल तत्त्व पृथिवी, जल, वायु, अग्नि, आकाश ही नहीं वन, पशु-पक्षी, आश्रम, नदियाँ, पर्वत-पहाड़ का निपुण चित्रण व्यंजना शैली में करते हुए यह सन्देश दिया है कि - **जनानां हितम् प्रकृतिसंरक्षणे निहितम्।**

कालिदास को मेघ अत्यधिक प्रिय है। मेघ के बिना पर्यावरण की कल्पना नहीं की जा सकती है और पर्यावरण के बिना जीवन असंभव है। मेघ को ही काव्य का आधार बनाकर लिखा गया है - 'मेघदूतम्'। मेघ से प्राणिमात्र परिचित है। पशु-पक्षी से लेकर राज-राज कुबेर के अनुचर यक्ष तक उसका स्वागत और सम्मान करते हैं। स्थूल और सूक्ष्म, दृश्य और अदृश्य सभी पदार्थ मेघ के आगमन से प्रभावित होते हैं। महाकवि ने मेघ को साधु, सौम्य, सुभग और आयुष्मान् कहा है। उसका संचय त्याग के लिए है इसलिए वह 'परोपकारिन्' भी है। प्रजापालन में प्रजापति, नीलाम्बर से विष्णु तथा महेश की समता रखता है। मेघ की आयु सृष्टिकाल के समान सनातन है। प्रजा की सृष्टि, स्थिति और संहार तीनों में उसका भाग है। वह अमर ब्रह्मचारी है इसलिए पुरातन होते हुए भी नित्य युवा है। प्रतिवर्ष वह अपना काया कल्प स्वतः कर लेता है। जीवन-जल को धारण करने के कारण वह जीमूत है। जल का सर्वत्र वहन करने से वह अम्बुवाह या वारिवाह है। जल का अपने अन्दर मेहन करने से वह मेघ है। अपनी प्रियतमा सौदामिनी से सदा संयुक्त रहने से वह तडित्वान् है। वह अर्धनारीश्वर शिव के समान अपनी प्रियतमा विद्युत् को गोद में बिठाये देश-विदेश घूमता रहता है। यह विद्युत् ही वर्षा करती है। कवि कालिदास ने वायु के प्रहार को सहन करने के कारण मेघ को 'घन' कहा है।[5] उसके अन्दर जलराशि भरी है, अतः वह **'स्तम्भितान्तर्जलौघः'** भी है। जल की एक संज्ञा 'वृष' भी है। वृषहीन पुरूष को पुरूषार्थ के अयोग्य माना गया है। अनन्त वृषशक्तिमान् मेघ को ही सोपान बनाकर भगवान् शिव मणितट या मणिपर्वत पर आरोहण करते हैं। जल-वृष की एक संज्ञा इन्द्र भी हैं। बलाकामिथुन गर्भाधान हेतु मेघ की सेवा करते हैं। इसलिए इन्द्र के प्रधान पुरूष की एक संज्ञा 'बलाहक' भी है। इन्द्र को कालिदास ने कुमारसंभवम् में भी वृषा की संज्ञा दी है तथा मेघ को वृषन्धि कहा है। 'यास्क' मेघ के पर्यायों में वराह का उल्लेख करते हैं। कालिदास ने भी मेघ को इस रूप में देखा है। **उन्होंने मेघ को जीमूत, जलमुच् और प्रकृति-पुरूष तथा मघोनः भी कहा है।**[6]

कालिदास ने मन्दार, कल्प, देवदार आदि वृक्षों को बार बार अपने काव्यों में स्मरण किया है। मेघदूतम् में मन्दार वृक्ष, मन्दार पुष्प, बाल मन्दार आदि कहकर इसके प्रति अपना अनुराग प्रकट किया है। बाल मन्दार को तो कृतकतनय कहकर पुत्र के समान महत्त्व दिया है। भारतीय साहित्य परम्परा में पाँच वृक्षों को श्रेष्ठ वृक्ष अर्थात् देव वृक्ष का स्थान प्राप्त है। **"पंचैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः। सन्तानः कल्पवृक्षश्च पुंसि वा हरिचन्दनम्।।"** कहकर अमर कोश में देवदार, मन्दार, पारिजात, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन को देवतरु माना गया है। कालिदास ने इन पाँचों वृक्षों का वर्णन अपने काव्यों में यथा स्थान करके इस वृक्षों के पर्यावरणीय उपयोगिता पर बल दिया है। यथा मेघदूतम् में -

मन्दाराणामनुतटरुहां छायया वारितोष्णाः।

गत्युत्कम्पादलकपतितैर्यत्र मन्दारपुष्पैः

तस्योपान्ते कृतकतनयः कान्तया वर्धितो मे हस्तप्राप्यस्तबकनमितो बालमन्दारवृक्षः।

एकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः।

तं चेद्वायौ सरति सरलस्कन्धसंघट्टजन्मा बाधेतोल्काक्षपितचमरीबालभारो दावाग्निः।

भित्वा सद्यः किसलयपुटान्देवदारुद्रुमाणां ये तत्क्षीरस्रुतिसुरभयो हक्षिणेन प्रवृत्त।

कालिदास प्रकृति व पर्यावरण के कवि हैं। इनके मेघदूतम् में प्रकृति के विविध रूपों के दर्शन होते हैं। विभिन्न ऋतुओं में पाए जाने वाले पुष्पों का एक जगह वर्णन प्रकृति-चित्रण का अनूठा निदर्शन है। ग्रीष्म और शरद् में कमल, हेमन्त में कुन्द, शिशिर में लोध्र, वसन्त में कुरबक, ग्रीष्म में ही शिरीष तथा वर्षा ऋतु में कदम्ब के पुष्प विकसित होते हैं। कालिदास ने मोहक पर्यावरण और अतिशय अनुराग

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

के कारण समृद्धि की पराकाष्ठा को प्राप्त नगर की स्त्रियों के श्रृंगार के लिए पुष्पाभूषणों का प्रयोग दिखा कर अपनी पर्यावरण चिन्तन को मूर्त रूप दिया है।[7] यह पद्य द्रष्टव्य है -

"हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुबिद्धं नीतालोध्र प्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्रीः।
चूडापाशे नवकुरबकं चारू कर्णे शिरीषं सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।।"

मेघदूतम् में कवि ने विभिन्न शब्द-शक्तियों के द्वारा अपनी बात को पाठकों के समक्ष रखा है। व्यंजना में कालिदास की कोई सानी नहीं। सम्पूर्ण मेघदूतम् व्यंजना शक्ति से विदग्ध है। इससे न केवल काव्य सौन्दर्य में निखार आया है अपितु सर्वत्र कवि का प्रकृतिप्रेम और पर्यावरण चिन्तन प्रस्फुटित हुआ है। यह उदाहरण द्रष्टव्य है -

"श्यामास्वङ्गं चकितहरिणीप्रेक्षणे दृष्टिपातं

वक्त्रच्छायां शशिनि शिखिनां बर्हभारेषु केशान्।

उत्पश्यामि प्रतनुषु नदीवीचिषु भ्रूविलासान्

हन्तैकस्मिन् क्वचिदपि न ते चण्डी सादृश्यमस्ति।।"

यहाँ व्यंजना के माध्यम से प्रकृति प्रेमी कालिदास ने प्रियंगुलता, हिरणी, मयूर, नदियों के तरंग आदि को अत्यन्त अनुरागात्मक भाव से व्यक्त कर अपने पर्यावरण प्रेम को प्रदर्शित किया है। [8]

कृषि को मेघ के अधीन कहते हुए भारतीय संस्कृति के विभिन्न तत्त्वों को एक साथ प्रस्तुत कर पर्यावरणीय चिन्तन को दर्शाया है -

त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञैः

प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोलनैः पीयमानः।

सद्यः सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारूह्य मालं

कि ंचित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण।।

अन्ततः कहा जा सकता है कि - महाकवि कालिदास ने प्रकृति और पर्यावरण के साथ तादात्म्य की स्थापना की है। वह प्रकृति को सजीव तथा मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण मानते हैं। पर्यावरण को अनुकूल व सुखद देखना चाहते हैं। कवि के अनुसार मानव की तरह प्रकृति भी सुख-दुःख का अनुभव करती है। इस तरह मनुष्य और प्रकृति एक दूसरे के लिए पूरक का कार्य करते हैं। प्रकृति और मानव जब तक एक दूसरे के लिए पूरक का कार्य करेंगे तभी तक विश्व में सौम्य पर्यावरण सम्भव है। क्योंकि पर्यावरण तथा मानव का अन्तः सम्बन्ध ज्ञान और व्यावहारिक उपयोग में सन्निहित होता है।[9]

विचार-विमर्श

भारतीय दर्शनों के अनुसार इस संपूर्ण जगत् का निर्माण पृथ्वी , वायु , अग्नि , आकाश , और जल इन पांच महाभूतों से होता है। अतः प्रकृति में दिखाई देने वाले समस्त पदार्थ भी इन पांच महाभूतों से ही निर्मित है। आधुनिक समय में जिसे पर्यावरण या पारिस्थितिकी या परिवेशिकी कहा जाता है उसे ही प्राचीन ग्रन्थों में प्रकृति का नाम दिया गया है। पर्यावरण शब्द परि + आ + वृ + ल्युट् से सिद्ध होता है। जिसका अर्थ है - वह वातावरण जो मनुष्य को चारो ओर से व्याप्त कर उससे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। प्रकृति के उत्पादन जैसे जल , वायु , मृदा , पादप तथा विभिन्न प्राणी यहाँ तक कि स्वयं मानव भी पर्यावरण का एक अंश है। अतएव जीव जगत् और प्रकृति का परस्पर अभिन्न संबंध भी है। प्राकृतिक शुद्धता पर ही पर्यावरण की शुद्धता निर्भर होती है अतः अपने आसपास विद्यमान जगत् एवं जीवन के आधारभूत पंचमहाभूतों को शुद्ध बनाए रखना एवं उन्हें दूषित न होने देना मानव जीवन का परम कर्तव्य है। इसी कारण प्राचीन काल से ही विशाल संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षरण और संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया है। वृक्ष वनस्पतियों को शास्त्रों में देवता तुल्य मानकर उनकी पूजा अर्चना करने का विधान है। क्योकि वृक्ष स्वाभाविक रूप से विषैली वायु का स्वयं पान कर मानव

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

जीवन को शुद्ध प्राणवायु प्रदान करते हैं। अतएव यजुर्वेद का ऋषि वृक्ष वनस्पतियों की उपासना करता हुआ मंत्रोच्चारण करता है नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः। वनानां पतये नमः। ओषधीनां पतये नमः।

संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि, महाकवि कालिदास अपने ग्रंथों में प्रकृति से विशेष प्रेम करते दिखाई देते हैं। उन्होंने दो महाकाव्यों की रचना की है - कुमारसंभव महाकाव्य एवं रघुवंश महाकाव्य जो कि इस शोध पत्र के प्रमुख विषयक्षेत्र हैं। इन दोनों ही महाकाव्यों के प्राकृतिक वर्णनों में कालिदास ने प्रकृति के सौत्रदय को तो प्रकट किया ही है साथ ही प्रकृति संरक्षण के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करते हुए अपने नायक - नायिकाओं के माध्यम से उन्हें हानि न पहुंचाने का भी संदेश जनसाधारण को दिया है। किंच प्रकृति के वैशिष्ट्य एवं महत्व - प्रतिपादन में उन्होंने 'ऋतुसंहार' नामक एव स्वतंत्र मुक्तक काव्य ही लिख दिया है। जबकि अपने विश्वप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' के मंगलाचरण में उन्होने अष्टमूर्ति देव के रूप में प्रकृति के मूलभूत तत्वों (जल, अग्नि, सूर्य, चंद्रमा, आकाश, पृथ्वी, वायु) की स्तुति करते हुए प्रकृति की ईशरूपता भी प्रतिपादित कर दी है।[10]

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।।

वे अपने दो महाकाव्यों मे से 'कुमारसंभव' का तो आरम्भ ही हिमालय के प्राकृतिक वर्णन से करते हैं -

अस्त्युत्तारस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

कुमारसम्भव महाकाव्य के सूक्ष्माध्ययन से पता चलता है कि पार्वती शिव को पति रूप में प्राप्त करने हेतु तपस्या करने के लिए जिस गौरी शिखर पर्वत पर जाकर अपनी कुटिया बनाती है, वहां सर्वप्रथम वह पौधे रोपित करती है और उन्हें अपनी संतान की तरह जलरूपी दूध से प्रतिदिन सींचकर उनका संवदर्धन करती रहती है। जो कि वेदाध्ययन यज्ञ आदि की तरह ही उसकी तपस्या पूर्ण दिनचर्या का एक कार्य है। इसी प्रकार रघुवंश महाकाव्य में सिंह एवं दिलीप के संवाद के अवसर पर सिंह दिलीप को एक वृक्ष का परिचय कराते हुए कहता है कि हे राजन् यही वो देवदारू का वृक्ष है जिसे शिव और पार्वती ने मिलकर अपने पुत्र के समान पाला है। और जब इस पेड़ से रगड़ लगाकर हाथी ने इसकी छाल उतार दी थी तो पार्वती को ऐसा कष्ट हुआ था जैसा राक्षसों के साथ युद्ध करने पर क्षतग्रस्त अपने पुत्र कार्तिकेय को देखकर हुआ था। कालिदास पौधों के रोपण एवं वृक्षों के संरक्षण के प्रति इतने अधिक आग्रही है कि वे कहते हैं यदि कोई विष का वृक्ष स्वयं उग आए और बडा हो जाये तो उसे भी नहीं काटना चाहिए। 'विषवृक्षोपि संवध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्'। क्योंकि वह प्राणियों को हानि की अपेक्षा लाभ ही अधिक पहुंचाने वाला होगा। उसकी तपस्या के फलस्वरूप तपोवन में विरोधी हिंसक जंतुओ का भी द्वेषरहित होकर प्रेम पूर्वक एक साथ रहना प्रकृति प्रेम एवं जीव संरक्षण का अद्भुत उदाहरण है। पार्वती के द्वारा वृक्ष से स्वयं टूट कर गिरे हुए पत्तों को ही आहार के रूप में ग्रहण करने का वर्णन तो कालिदास के प्रकृति संरक्षण की पराकाष्ठा है। जिससे प्रेरणा लेकर पाठक कम से कम पुष्पों के दुरूपयोग को छोडने का प्रयास तो कर ही सकते हैं। क्योंकि फूल पत्तों आदि जब तक वृक्ष पर लगे रहते हैं तब तक हमें सुगंध आदि एवं प्रकाश सश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा लाभान्वित करते रहते हैं। अतः उनको तोडना उचित नहीं।

संस्कृत साहित्य में वर्णित मुनियों के आश्रम मानव एवं वन्य जीवों के मध्य विद्यमान सौहार्द स्वस्थ पर्यावरण को द्योतित करते है। क्योंकि पशु पक्षी भी पर्यावरण के मुख्य घटक हैं। रघुवंश में हमें ऋषिपत्नियां हिरणों का लालन - पालन अपने संतानों की तरह करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं तो कुमारसम्भव में पार्वती की तपस्या के फलस्वरूप तपोवन में विरोधी जन्तुओं ने भी अपना परस्पर वैरभाव त्याग दिया है और वे तपोवन में द्वेषरहित होकर प्रेमपूर्वक एक साथ रह रहे हैं। यह प्रकृति प्रेम एवं जीव संरक्षण का अद्भुत उदाहरण है।[11]

तपोवन में आकर ब्रहमचारी के द्वारा पार्वती से यह पूछना कि तपोवन की लताओं एवं वृक्षों मे कोपल फूटना उचित प्रकार से तो हो रहा है न! किसी प्रकार का अवरोध तो नहीं है? वन का जल तुम्हारे स्नान करने योग्य तो है ना! दूषित तो नही हैं? इत्यादि प्रश्न प्रकृति के मूलभूत (जल वृक्ष वनस्पति आदि) तत्वों की शुद्धता एवं संवर्द्धन के प्रति मानव को जागरूक रहने का संदेश देते हैं। वास्तव में देखा जाये तो प्राचीन ग्रन्थों में जल को दूषित करना महापाप माना गया है। रामायण में महर्षि वाल्मीकि भरत के मुख से इस प्रसंग को उपस्थापित करते हुए कहते है कि 'जिस की अनुमति से

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

मेरे भ्राता राम वन में गये है उसे वही भयंकर पाप लगना चाहिए जो जल को दूषित करने या किसी को विष देने पर लगता है'-

पानीयद्रूषके पापं तथैव विषदायके।
यत्तदेकः स लभतां यस्योर्योनुमते गतः।।

अर्थात् यहां पानी को दूषित करना किसी को विष देकर जीवन समाप्त करने के बराबर माना गया है। प्राणियों के जीवन में जल की अपरिहार्य आवश्यकता एवं उसके अभाव में प्राणी जीवन के भयावहता को दर्शाने वाला कालिदास का एक ग्रीष्म ऋतु का वर्णन उस काल्पनिक तृतीय विश्व युद्ध का स्मरण कराता है जिसके विषय में पर्यावरणविद् कहते हैं कि तीसरा विश्वयुद्ध संसार में जल की प्राप्ति के लिए लड़ा जायेगा। क्योंकि उस स्थिति में प्राणी मृत्यु के भी भय को छोडकर जल प्राप्ति द्वारा अपने जीवन की रक्षा प्राथमिक कर्म समझते हैं। कालिदास अपने वर्णन में लिखते है कि 'कैसा प्रचण्ड ग्रीष्म है, सूखे कण्ठ से जल बिन्दुओं को ग्रहण करने वाले, सूर्य की प्रचण्ड किरणों से तप्त एवं अत्यधिक प्यासे, जल की इच्छा करने वाले हाथी यह भी भूल जाते है कि सिंह उन्हें मार डालेगा। वे प्यास से व्याकुल जल की खोज में सिंह से भी नहीं डरते।[12]

रघुवंश महाकाव्य में पृथ्वी के शासक राजा दिलीप एवं स्वर्ग के राजा इंद्र के द्वारा अपनी अपनी संपत्तियों का परस्पर विनियम कर दोनो लोकों को सुचारू रूप से संचालित करना इस बात का स्पष्ट संदेश दे रहा है कि प्रकृति के अनुकूल, पर्यावरण को शुद्ध करने वाले यज्ञ आदि कार्यों के द्वारा देवता प्रसन्न होते हैं, और वे समय पर वर्षा आदि के द्वारा पृथ्वी का उपकार करते हैं -

दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्।
सम्पद्विनियेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्।।

कालिदास द्वारा गुरू वसिष्ठ के आश्रममार्ग के वर्णनप्रसंग में सम्पूर्ण रास्ते के दोनों ओर स्थित वृक्षों की पंक्तियां बीच बीच में निकट स्थित कमलों की शोभा से युक्त तालाब उन तालाबों में खिल रहे कमलों की खुशबू एवं शीतल कणों से युक्त हवा का हल्का - हल्का स्पर्श अनायास ही सहृदय पाठक के मन में अत्यधिक संख्या में वृक्ष, वन, सुन्दर - सुन्दर पुष्प, शुद्ध जल एवं शुद्ध वायु के संरक्षण हेतु आकर्षणपूर्वक प्रेरणा प्रदान कर देते हैं।[13]

इस प्रकार हम देखते हैं कि कालिदास के महाकाव्यों में उनके पात्र प्रकृति से अत्याधिक प्रेम करते हुए, उसके प्रति अत्यधिक श्रद्धा भाव रखते हैं। यथार्थतः मानव में यह भाव आना ही प्रकृतिसंरक्षण का मूल है। अतः मनुष्य को प्रकृति प्रेमी होते हुए जल वायु आदि को दूषित होने से बचाना चाहिए। नगरीकरण की अंधी दौड में वृक्ष, वनों को न काटकर अधिक से अधिक संख्या में वृक्ष लगाने चाहिए ओर न केवल वृक्ष लगाने चाहिए अपितु पौधे लगाकर जब तक वे वृक्ष न बन जाए, उन पर फल फूल आदि ना आ जाए तब तक उनका संरक्षण एवं संवर्धन करते रहना चाहिए। संस्कृत साहित्य में एक वृक्ष का पालन करना 10 पुत्रों के पालन के समान महत्वपूर्ण, गरिमामय व लाभदायक माना गया है -

दशकूपसमा वापी दशवापी समो ह्रदः।
दशह्रदसमो पुत्रः दशपुत्रसमो द्रुमः।।

परिणाम

पर्यावरण, वातावरण या प्रकृति, ये शब्द अर्थ की दृष्टि से काफी कुछ मिलते-जुलते हैं। भारतीय मनीषा में पंच महाभूत तथा अष्टप्रकृति के नाम से जिन मुख्य तत्वों को माना गया है, उन्हें हम आज भी-आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, सूर्य और चंद्रमा आदि के रूप में देख सकते हैं। पर्यावरण शुध्दि और संतुलन की दृष्टि से यज्ञ का महत्व आज वैज्ञानिकों ने भी मान लिया है, अत: उपर्युक्त तत्वों में यज्ञ्कत्ता को भी आठवें क्रम पर स्वीकार किया गया था। ऋषियों ने आध्यात्मिक पर्यावरण को भी भूगोलीय व खगोलीय पर्यावरण के अभिन्न हिस्से के रूप में माना। वैदिक शान्ति पाठ में भी हम इन्हीं प्राकृतिक शक्तियों की शान्ति और समन्वय की प्रार्थना अथवा कामना अनादिकाल से करते आए हैं। यह स्वाभाविक ही है, कि इसी वैदिक पृष्ठभूमि पर भारतीय संस्कृति के अमर गायक के रूप में अवतरित होने के कारण महाकवि कालिदास आदि ने भी बड़े रोचक, प्रभावी तथा व्यावहारिक ढंग से पर्यावरण के प्रति संवेदना तथा सजगता की बातें बताईं।[14]

भारत वर्ष एक कृषि प्रधान देश माना जाता है। ठीक इसी प्रकार यह ऋषि प्रधान देश है। कृषि और ऋषि के बिना इस राष्ट्र की कल्पना असंभव है। वर्षा के बिना कृषि तथा ज्ञान वर्षा के बिना ऋषि का कोई महत्व नहीं है। दोनों हो तो एक स्वस्थ राष्ट्रीय पर्यावरण निर्मित हो जाता है। वर्षा एक पर्व के रूप में हिन्दुस्तान में देखी जाती रही है। वर्षा मेघ के बिना कैसे संभव होगी? मेघों को हम स्थायी कृषिमंत्री, पर्यावरण दूत तथा प्राणदाता के रूप में जानते तथा मानते आए हैं। वह अनादिकाल से समृध्दि शान्ति तथा सुसंतुलित पर्यावरण का आधार रहा है। भारतीय जनमानस हमेशा ही यह प्रार्थना करता रहा है कि समय पर वर्षा हो, पृथ्वी हरी-

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

भरी रहे, अकाल न पड़े और सर्वजन निर्भय रहें-

काले वर्षतु पर्जन्य: पृथिवी शस्यशालिनी।
देशोऽयं क्षोभरहित: प्रजा सन्तु च निर्भया:॥

महाकवि कालिदास की अमरकृति 'मेघदूत' भी इन्हीं भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाला एक सुन्दर विश्वगीत है। छत्तीसगढ़ के 'रामगिरि' (रामगढ़) की घनी छाया वाले उन शुध्द तथा पवित्र जलाशयों वाली वादियों से मेघ उठते हैं, जो कभी भगवती सीता के स्नान से पवित्रतर हुए थे। अर्थर्ववेद के अनुसार जो धरती माता, नाना धर्मावलम्बियों, विविध भाषा-भाषियों की गोद है तथा कामधेनु के समान उन सबकी इच्छाएं भी पूरी करती है। कालिदास के मेघ ग्रीष्म ऋतु से सन्तप्त इसी धरती की प्यास बुझाने के पश्चात उसे हरी-भरी फसल और वनस्पति के पर्यावरण से तो शृंगारित करते ही हैं, धनधान्य से सम्पन्न भी करते हैं। कृषक स्त्रियां इस मेघ देवता को बड़ी हसरत भरी निगाहों से इसीलिए देखती हैं, क्योंकि सफल खेती का पूरा दारोमदार इसी पर तो टिका है। वही पालक और वही पोषक भी है।[11]

जंगल में मंगल:

यह सुखद आश्चर्य है कि कालिदास साहित्य में चित्रित सीता, शकुन्तला, पार्वती तथा लक्ष्मी पर्यावरण के चार मुख्य घटक पृथिवी, वन, पर्वत तथा समुद्र की पुत्रियां हैं। सामाजिक वानिकी (सोशल फॉरेस्ट्री) की चर्चा को हम आधुनिक, वैज्ञानिक अथवा पश्चिम की खोजपूर्ण मौलिक देन मानकर वस्तुत: गलतफहमी या खुशफहमी के शिकार हैं। विश्वप्रसिध्द शाकुन्तल नाटक की नायिका शकुन्तला तो शकुन्त अर्थात् पक्षियों से लालित-पालित होने के कारण ही तो शकुन्तला कहलाई। जो वृक्षों की सिंचाई के पूर्व पानी पीना अनावश्यक मानती है। सजने के लिए फूल-पत्तियों तक नहीं तोड़ती। पहली बार फूल खिलने पर उत्सव मनाती है। मृगवधू बिना परेशानी के प्रथम संतान को जन्म देकर सकुशल रहे, ये भार ससुराल जाते समय अपने धर्मपिता कण्व पर डालती है। मृग का वह शिशु, जिसको शकुन्तला ने पाला-पोसा, बिदाई के समय उसका पल्लू पकड़ कर मानो जाने से रोकता है। उधर 'कुमारसंभवम्' की पार्वती के हाथों से हिरण निश्चिन्त होकर दाना खाते हैं। 'मेघदूतम्' की यक्षपत्नी हथेलियों के ताल दे कर मोरों को सानन्द नाचने के लिए प्रेरित करती है। सफल तथा प्रसन्न भी इसलिए होती है। रघुवंश में दिलीप छाया की तरह नंदिनी गौ का अनुगमन करते हुए सेवा करते हैं। उसके चलने पर चलते, बैठने पर बैठते, पानी पीने पर पानी पीते तथा सोने पर सो जाते। यही कारण है कि रास्ते के आस-पास वृक्षों पर बैठे पक्षीगण राजा का जय-जयकार करते हैं। महाराज दिलीप के प्रवेश करते ही 'जंगल में मंगल' का दृश्य दिखाई देने लगा। शक्तिशाली प्राणियों ने कमजोरों को दबाना बंद कर दिया। बिना वर्षा के दावाग्नि शांत हो गई तथा वृक्षों में फूलों और फलों में आशातीत वृध्दि हो गई। लगभग यही दृश्य हिमालय पर्वत पर देवी के तपस्या करते समय स्थापित हो गया। जो कुछ अज्ञानी किन्तु प्रभावशाली लोग अच्छे खासे "मंगल" को "जंगल" में बदलने पर उतारू हैं, "पृथ्वी सम्मेलनों" में घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। उन्हें कालिदास साहित्य के इस 'जंगल में मंगल' संबंधी न केवल सराहनीय अपितु अनुकरणीय संदेश को ग्रहण करना चाहिए।[12]

देवात्मा नगाधिराज:

हिमालय हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का उच्चतम प्रतीक होने के साथ-साथ भूगोल, खगोल और पर्यावरण का भी सर्वोच्च नियामक है। जीवनदायिनी गंगा-यमुना नदियों का जनक अत: 'गंगोजमन' की संस्कृति का भी विधाता है। प्रसाद, पन्त, निराला, दिनकर तथा इकबाल जैसे अनेक महाकवियों ने राष्ट्र के सजग प्रहरी के रूप में हिमाद्रि के तुंग शृंगों की प्रशस्त प्रशस्ति की। किन्तु यदि इसे देवताओं का भी आत्मस्वरूप मानकर, पूर्व से पश्चिम तक पृथिवी को नापने वाले 'मानदण्ड' (मीटर) के रूप में तथा अनन्त रत्नों के अखण्ड भण्डार के रूप में इसकी अर्चना और वंदना करने वाला कोई प्रथम राष्ट्रकवि हुए तो कालिदासजी हैं। वे लिखते हैं-

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज:।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थित: पृथिव्या इव मानदण्ड:॥
-कुमारसंभवम्।

उत्तरांचल की यात्रा के अध्ययन के दौरान वृक्षमित्र तथा 'चिपको आंदोलन' के प्रणेता वनर्षि सुन्दरलालजी बहुगुणा के विषय में इन पंक्तियों के लेखक ने जो जाना, बड़ा पूज्य भाव उनके प्रति पैदा हुआ। लगता है- कुमारसंभव, अभिज्ञान शाकुन्तल, मेघदूत तथा रघुवंश आदि में हिमालयी पर्यावरण का मनोमुग्धकारी किन्तु व्यावहारिक वर्णन करके कालिदास जी उनका पन्थ प्रशस्त कर गए हैं।[13]

समन्वय के चमत्कार शिव आपको नमस्कार

देवाधिदेव महादेव शिवशंकर, प्रदूषण विष को पीने के कारण ही महामृत्युंजय कहलाए। अब 'समुद्रमन्थन' को कोरा मिथक मानने की मान्यता को वैज्ञानिक भी ध्वस्त कर चुके हैं। आकाश तथा वायु आदि आठ प्रकृति उनके प्रत्यक्ष रूप है, ऐसा कहकर राष्ट्रकवि ने नास्तिकों के मुंह पर करारा तमाचा जड़ा है। वे समस्त वन्य पशु आदि के स्वामी होने से पशुपति कहे जा सकते हैं। वस्तुत: तो वे प्राणिमात्र के प्राणनाथ अत: भूतनाथ और विश्वनाथ माने गए हैं। ये नाम बड़े सार्थक हैं। प्रकृति प्रेमियों को इन पर इस दृष्टि से भी चिन्तन और मनन करना चाहिए। वे कालिदास के आराध्य भी हैं। प्राय: हर ग्रन्थ के शुभारंभ के मंगल श्लोकों में कवि ने उन्हें एक व्यापक पर्यावरणीय देव के रूप में स्मरण किया। अभिज्ञान शाकुन्तल का नंदीपाठ तो प्रकृति संवेदना का जीवन्त और शाश्वत

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

शिलालेख ही है। सिर पर पानी (गंगाजल) तीसरी आँख में आग, माथे पर चन्द्रमा में अमृत तथा कण्ठ में महाकाल विष को एक साथ धारण कर संतुलन एवं समन्वय के अद्वितीय आदर्श हैं। अमृत-विष तथा आग-पानी जैसे सर्वथा विरोधी प्राकृतिक उपादनों में तालमेल रखना एक चमत्कार है। उनके पारिवारिक वाहन प्रतीकों में सामंजस्य भी दूसरा चमत्कार है। स्वयं का बैल, दुर्गा (पार्वती) का सिंह, गणेश के चूहे और भोलेनाथ के नाग, स्वयं (शिव) के हृदय हार सर्प और कार्तिकेय के मोर ये परस्पर नित्य बैरी हैं। किन्तु 'वन्य प्राणी सुरक्षा सप्ताह' या 'मास' मनाने वाले हम लोगों को यहां से प्राणियों में आजीवन समन्वय, सुरक्षा एवं सुखी जीवन की प्रेरणा मिलती है।[14]

शेर को जंगल का राजा इसीलिए तो माना:

कालिदास रघुवंश में वर्णन करते हैं कि पार्वती के पालित पुत्र देवदारु के तने की छाल को छील दिया किसी जंगली हाथी ने, अपने शरीर को उससे रगड़ कर। कार्तिकेय से पहले जन्मे अत: अधिक प्रिय देवदारु की इस पीड़ा को न सह सकने वाली देवी पार्वती तब तक रोती रहीं और खाना नहीं खाया जब तक त्रिशूलपाणि शिव ने अपने कुम्भोदर नामक सेवक को शेर के रूप में उस वृक्ष पुत्र की रक्षा में नियुक्त न कर दिया। कदाचित् तभी से ये जनश्रुति अस्तित्व में आई कि 'शेर जंगल का राजा है।' प्राणवान और संवेदनशील वनस्पतियों की रक्षा का यह विशिष्ट तथा प्रतीकात्मक तरीका है। आज वन उजड़ रहे हैं, शेर समेत अन्य वनप्राणियों को मारा जा रहा है। भयंकर सूखे के दौर से हम गुजर रहे हैं। वनों के अभाव में वर्षा कैसे होगी? न रहेंगे शेर, न रहेंगे वन तो अवर्षा तो होगी ही। प्रकृति तथा पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यदि कालिदासीय प्रबंधन को हम रेखांकित कर जीवन में उतारें तो देश व जगत का भी भला होगा।[12]

निष्कर्ष

प्रकृति और पर्यावरण मानव की चिर सहचरी के रूप में विख्यात है। पर्यावरण के मूलभूत तत्व क्षिति-जल-पावक-गगन-समीर के बिना मनुष्य की कल्पना असंभव है। संस्कृत साहित्य में पर्यावरण संरक्षण के लिए गहन चिन्तन किया गया है। अमर कलाकार दीपशिखा कालिदास ने अपने काव्यो में पर्यावरण प्रबन्धन की सुखद एवं मनोहारी चित्रण कर हमें संदेश दिया है कि हम प्रकृति को अपनी जीवन दायिनी शक्ति के रूप में समझे, दासी के रूप में नहीं। प्रकृति अष्ट-रूपा है। उसके आठ रूप हमारे अस्तित्व को बरकरार रखते है। **जलमयीमूर्त्ति, अग्निरूपामूर्त्ति, मानवप्रजातिरूपीमूर्त्ति, सूर्य-चन्द्रमयीमूर्त्ति, पृथ्वीरूपीमूर्त्ति, वायुरूपामूर्त्ति और आकाशरूपीमूर्त्ति - यही प्रकृति का, पर्यावरण का कल्याण कारक रूप है।** इनका अनैतिक दोहन, अनुचित प्रबन्धन आपदाओं का जन्म देने वाली है। यह 'शिव' अर्थात् जगत् के कल्याण कारक रूप की अष्टमूर्त्ति कही गई है। 'शिव' को छेड़ने पर शिव हमें 'शव' बना देता है। इस शिव को अपने कल्याण रूप में ही प्रयोग करें। कालिदास के ही शब्दों में -

या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,

ये द्वे कालं विधत्तः श्रुति विषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।

यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः।

महाकवि कालिदास ने अपने विक्रमोर्वशीयम् त्रोटक के प्रारम्भ में अपने आराध्य देव और प्रकृति एवं पर्यावरण के सबसे बड़े देव देवाधिदेव महादेव शिव के ''स्थाणु'' रूप का स्मरण करते हुए अपने पर्यावरण चिन्तन के वैज्ञानिक स्वरूप का दर्शन कराया है -

''वेदान्तेषु यमाहुरेकपुरूषं व्याप्य स्थितं रोदसी

यस्मिन्नीश्वर इत्यनन्यविषयः शब्दो यथार्थाक्षरः।

अन्तर्यश्च मुमुक्षुभिर्नियमितप्राणादिभिर्मृग्यते

सः स्थाणुः स्थिर-भक्ति-योग-सुलभो निःश्रेयसायाऽस्तुवः।।''

तैत्तिरीय उपनिषद् में भी कहा गया है - ''स एको य एकः स रूद्रो स ईशानो य ईषानः स भगवान् महेश्वरः।''

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

मालविकाग्निमित्रम् नाटक के मंगलाचारण में कवि ने प्रकृति की अष्टमूत्रि शिव से सन्मार्ग पर चलने वाली बुद्धि की कामना करते हुए पाप की ओर ले जाने वाली बुद्धि को मिटा दंने की लालसा की है। शिव की अष्टमूत्रियाँ जल, अग्नि, होता, सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, वायु और पृथिवी रूप हैं।[13] कहा भी गया है -

"जलं वह्निस्तथा यष्टा सूर्याचन्द्रमसो तथा।

आकाशं वायुरवनी मूर्तयोऽष्टौ पिनाकिनः।।"

कालिदास शैव हैं। वह शिवजी से हृदय के अन्धकार को दूर कर प्रकाश के मार्ग में ले जाने की प्रार्थना कर रहे हैं, परन्तु निपुण कवि की भाँति व्यंजना के माध्यम से अष्टमूर्ति शिव की उपासना कर रहे हैं जो पर्यावरण के मूल तत्त्व हैं। शिव ऐश्वर्यशाली हैं। ऐश्वर्य का अर्थ है अष्टसिद्धियों से युक्त। ये अष्टसिद्धियाँ हैं - अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशित्व तथा ईशत्व। भारतीय परम्परा में शिव अष्टसिद्धियों के स्वामी माने गये हैं। [14] कहा भी गया है -

"अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा।

प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः।।"

अणिमा सिद्धिः से योगी अति सूक्ष्म रूप धारण कर सकता है। लघिमा सिद्धि से योगी लघु, बहुत छोटा या हल्का बन सकता है। महिमा सिद्धि से योगी कठिन से कठिन कार्य कर सकता है। गरिमा सिद्धि से योगी गुरूत्व या भारीपन से युक्त हो जाता है। प्राप्तिः सिद्धि से योगी हर वांछित फल को पा सकता है। प्राकाम्य सिद्धि से योगी की कामना पूर्ण होती है। वशित्व सिद्धि से योगी सबको अपने वश में कर सकता है। और ईशत्व सिद्धि के प्रतिष्ठित हो जाने पर योगी ऐश्वर्य तथा ईश्वरत्व में भी स्वतः सिद्ध हो जाता है। शिव योगी ही नहीं योगिराज हैं। [11]अतः अष्टसिद्धियों से युक्त हैं। वास्तव में शिव साक्षात् ब्रह्म हैं। ब्रह्म से परे पर्यावरण नहीं है। कालिदास के ही शब्दों में -

"एकैश्वर्ये स्थितोऽपि प्रणतबहुफले यः स्वयं कृत्तिवासाः।

कान्तासम्मिश्रदेहोऽप्यविषयमनसां यः पुरस्ताद् यतीनाम्।।

अष्टाभिर्यस्य कृत्स्नं जगदपि तनुभिर्बिभ्रतो नाभिमानः।

सन्मार्गलोकनाय व्यपजयतु स वस्तामसीं वृत्तिमीशः।।"

अर्थात् भक्तों को बहुत फल देने का ऐश्वर्य अपने पास होते हुए भी जो स्वयं हाथी की खाल ओढ़े रहते हैं, शरीर के साथ पत्नी को लगाए रहते हुए भी विषयों से उपरत मनों वाले योगियों में श्रेष्ठ हैं और अपने आठ रूपों से जगत् को धारण करते हुए भी जिन्हें अभिमान छू तक नहीं गया है - ऐसे महादेव जी पाप की ओर ले जाने वाली आप सामाजिकों, दर्शकों, पाठकों की बुद्धि को मिटा दें जिससे कि आप सन्मार्ग का अवलोकन कर सके। कालिदास पर्यावरण के प्रकृति के अनन्य उपासक हैं। वह पर्यावरण को शिव अर्थात् कल्याण कारक मानते हैं। शिव से मनसा, वाचा, कर्मणा पाप को दूर करते हुए हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने की मंगलकामना कर अपनी सूक्ष्म पर्यावरणीय चिन्तन का परिचय दिया है।[12]

अपने आराध्यदेव शिव-शंकर-महादेव के समन्वय के चमत्कार को प्रस्तुत करने में कालिदास नहीं थकते। प्रदूषण का विष पीने के कारण कालिदास के आराध्य शिव और हमारे सर्वस्व भोलेनाथ महामृत्युंजय कहलाए। आकाश, वायु आदि उनकी अष्टमूर्तियाँ हैं ऐसा कहकर नास्तिकों का लताड़ा। समस्त वन्य पश्वादि के स्वामी हाने के कारण पशुपति कहलाए। वस्तुतः वे प्राणिमात्र के प्राणनाथ हैं अतः भूतनाथ और विश्वनाथ कहलाए। औषधियों के देवता चन्द्रमा को शिर पर बिठाने के कारण वैद्यनाथ हैं। प्रकृति एवं पर्यावरण अध्ययन के दारौन हमारी दृष्टि इस ओर इसलिए जाती है क्योंकि वे कालिदास के भी आराध्य हैं।[13]

कालिदास ने शिव को प्रायः अपने हर ग्रन्थ में आरम्भ के मंगलश्लोक में व्यापक पर्यावरणीय देव के रूप में स्मरण किया है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् का नान्दीपाठ तो प्रकृति संवेदना का जीवन्त और शाश्वत शिलालेख है। शिव का समन्वय रूप ध्यातव्य है - सिर पर जल (गंगा), तीसरी आँख में अग्नि, माथे पर अमृत (चन्द्रमा) और कण्ठ में हलाहल (विष)। महाकाल का यह सब एक साथ धारण करना क्या समन्वय और सन्तुलन का अद्वितीय आदर्श नहीं। अमृत-विष, आग-पानी जैसे सर्वथा विरोधी प्राकृतिक उपादानों में शिव ही तालमेल रख सकते हैं क्योंकि शिव 'शिव' (कल्याणकारी) हैं। उनके पारिवारिक वाहन प्रतीकों में सामंजस्य का दूसरा चमत्कार है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551| Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 10, Issue 2, March 2023 |

शिव के स्वयं का वाहन वृषभ, पत्नी पार्वती-गौरी का वाहन सिंह। ज्येष्ठ पुत्र का वाहन मयूर तो कनिष्ठ पुत्र का मूषक, और तो और स्वयं शिव के गले में नाग। चूहा, नाग, मोर वृषभ, सिंह एक साथ समन्वय के प्रतीक हैं।[14]

संदर्भ

1. हिन्दी विश्वकोश
2. यजुर्वेद अध्याय 16, मंत्र 17-19
3. अभिज्ञानशाकुन्तल अंक 1, श्लोक 1
4. कुमारसम्भव सर्ग 5, श्लोक 14
5. रघुवंशमहाकाव्य सर्ग 2, श्लोक 36-37
6. कुमारसम्भव सर्ग 2, श्लोक 55
7. वही सर्ग 5, श्लोक 28
8. रघुवंशमहाकाव्य सर्ग 1, श्लोक 50
9. कुमारसम्भवमहाकाव्य सर्ग 5, श्लोक 17
10. वही , सर्ग 5, श्लोक 33
11. रामायण , अयोध्याकाण्ड , सर्ग 75, श्लोक 53
12. ऋतुसंहार 1/15
13. रघुवंश्महाकाव्य सर्ग 1, श्लोक 26
14. वही सर्ग 1, श्लोक 38 -45

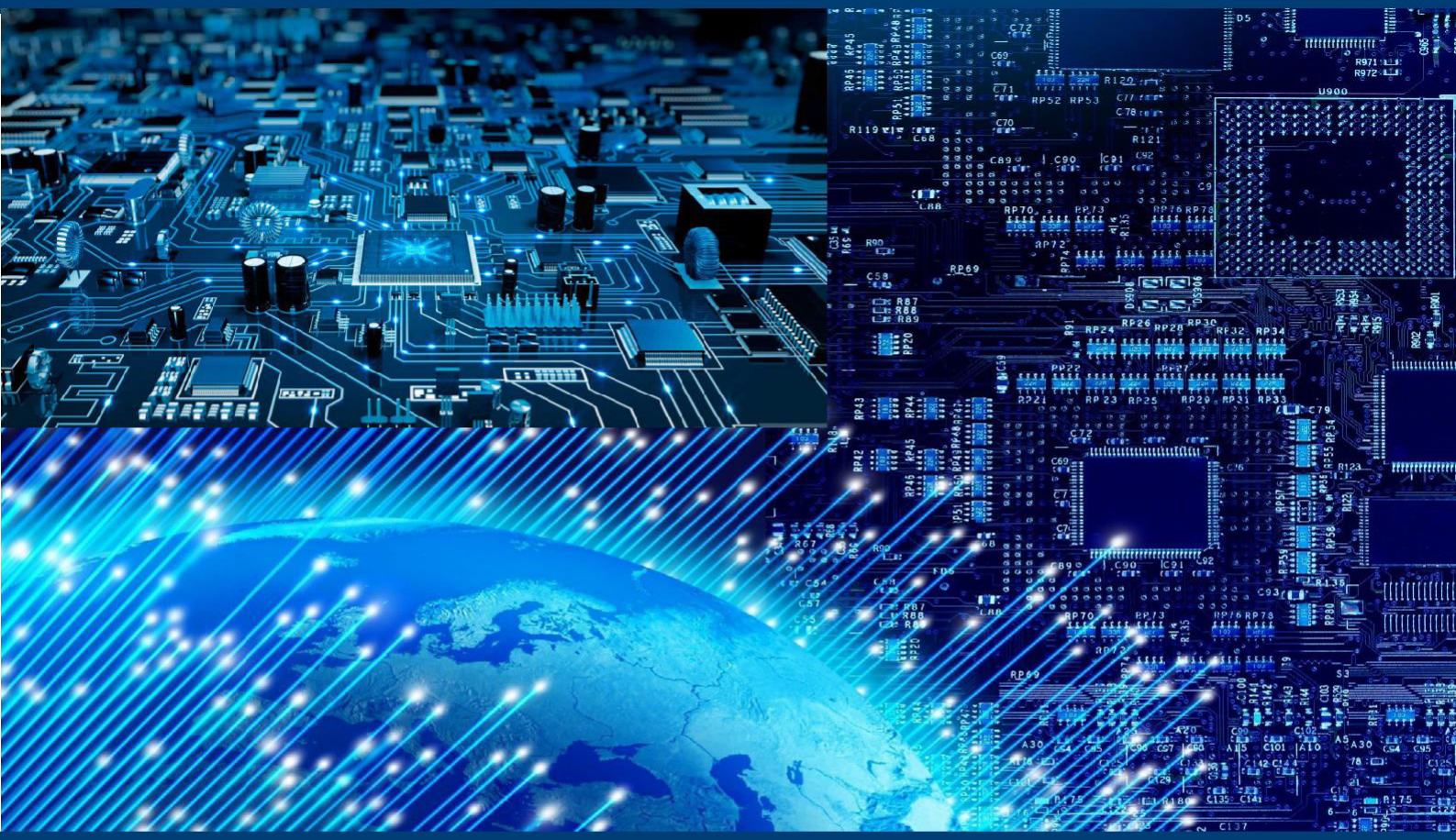

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |